

कला का अन्य विद्यालयी विषयों से संबंध

(Relationship of Art with other School Subject)

बालक के अधिगम की शुरूआत खेल और कलाओं से होती है। संसार उनके लिए खेल का एक मैदान और कला एक कैनवास है। इससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता है कि संसार रूपी कैनवास पर कुछ चित्रित कर सकते हैं या नहीं। वे कुछ सुंदर सृजन कर आनंदित होते हैं। सभी बालक कलाकार होते हैं। कला सभी विद्यालयी विषयों का अभिन्न अंग है। बालक की सभी शैक्षणिक गतिविधियां कलात्मक होती है। उदारणार्थ उंगलियों पर संख्या गिनना, रंगों से विभिन्न वस्तुओं को पहचानना इत्यादि। इसलिए २१वीं शताब्दी में बालको की शिक्षा में अन्य विषयों के साथ कला के एकीकरण पर विशेष बल दिया जा रहा है। कला का ज्ञान अन्य विषयों का ज्ञान प्रदान करने में सहायक होता है। अरुचीकर विषय भी कला से संबंधित होकर बालकों के लिए रुचीकर बन जाते हैं। कला जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित करती है। कला में सीखा हुआ ज्ञान सफलतापूर्वक अन्य विषयों में स्थानंतरित हो जाता है। किसी भी विषय का अध्यापक जब अपने शिक्षण विधि और तकनीक में कला को सम्मिलित करता है तो रोचक ज्ञान कम समय में ही विद्यार्थियों द्वारा ग्रहण कर लिया जाता है।

अन्य विषयों से सहसंबंध करने की विधियाँ

(Methods of Correlation with other Subject)

विभिन्न विषयों से संबंधित कला के सहसंबंध की दो प्रकार की विधियाँ हैं-

- 1. एक ही विषय में सह संबंध(Correlation within the subject):-** इसके अन्तर्गत विषय के विभिन्न अंगों में समन्वय स्थापित किया जाता है। इसे लंबवत या उद्धवगामी सह संबंध भी कहा जाता है। उदाहरणार्थ कला के मूल तत्वों के शिक्षण में राजस्थानी कला का ज्ञान देना।

2. **विभिन्न विषयों में सहसंबंध(Correlation between Subject):-** इसमें अध्यापक कला को अन्य विषयों में सहसंबंधित करके पढ़ाता है। जैसे कला विषय का शिक्षण करते समय भूगोल, इतिहास, विज्ञान इत्यादि का भी ज्ञान प्रदान करता है। इसे क्लैटिज सहसंबंध भी कहा जाता है।

इसके दो उपभेद हैं-

- i. **आकस्मिक सहसंबंध(Accidental Correlation) :-** कला अध्यापक सह संबंध की कोई पूर्व योजना नहीं बनाता वरन किसी पाठ के अध्यापन में विषय वस्तु को प्रभावकारी और सुबोध बनाने के लिए किसी अन्य विषय की पठित विषय वस्तु का उपयोग करता है। जैसे- कला इतिहास प्रकरण के शिक्षण में मुगल बादशाहों की प्रशासनिक नीतियों का ज्ञान देना।
- ii. **नियोजित सहसंबंध(Planned Correlation) :-** इसमें अध्यापक कला विषय का अन्य विषयों के साथ संबंध स्थापित करने के लिए विषयवस्तु का पहले से नियोजन कर लेता है। और विषयवस्तु की योजना अनुरूप तैयारी एवं शिक्षण सहायक सामग्री की भी तैयारी कर लेता है। जैसे- कला का इतिहास के शिक्षण के समय मुगल काल के शासकों की कला नीतियों का उदरण यथा स्थान पर प्रस्तुत करता है। इसी प्रकार कला के शिक्षण में अन्य विषयों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।

प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री **जे०एफ० हरबार्ट** ने स्पष्ट किया था कि समस्त ज्ञान का विकास तभी संभव है जब सभी विषयों को संबंधित करके पढ़ाया जाए। जे०एफ० हरबार्ट ने इसी विचार से आत्मबोध का सिद्धांत प्रतिपादन किया था। आगे चलकर इनके शिष्य **टी० जिल्लर** ने आत्मबोध के सिद्धांत को संसोधित कर केन्द्रियकरण का सिद्धांत प्रस्तुत किया। इसीलिए शिक्षा जगत में विषयों के सहसंबंध का श्रेय **हरबार्ट** को ही जाता है।

सहसंबंध के उद्देश्य (Aims of Correlation)

सहसंबंध के निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते हैं-

- i. अन्य विषयों को रोचक तथा मनोरंजक बनाना।
- ii. अधिगम के स्थानंतरण के अवसर देना।
- iii. विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम बोझ से बचाना।
- iv. विद्यार्थियों के ज्ञान को समग्र रूप से ग्रहण करने का अवसर प्रदान करना।
- v. प्रदत्त ज्ञान को ठोस स्थायी एवं व्यावहारिक बनाना।
- vi. विषय के ज्ञान को सोद्येश्य और जीवनोपयोगी बनाना।
- vii. विषय वस्तु एवं अध्यापन बिंदुओं को सरल और सुबोध बनाना।
- viii. विद्यार्थियों के संतुलित विकास का प्रयास करना।
- ix. किसी विषय से संबंधित समस्या का समाधान ढूढने में अन्य विषय के उपयोग करने की कला विद्यार्थियों का सिखाना।
- x. अन्य विषयों से सहसंबंधित कर पाठ्यक्रम को पूरा करने में समय की बचत करना।

कला का अन्य विषयों से सहसंबंध (Correlation of Art with other Subjects)

- **कला और गणित:-** गणित का आधार कला को हमेशा माना जाता रहा है। कला गणित को सीखने और सीखाने का उपकरण तैयार करती है। गणित शिक्षण में कला के सहयोग से अपनी विधियों को शशक्त किया है। अंकगणित, बीजगणित और रेखागणित गणित के तीनों विधियों में चित्रवत तरीके के साथ रेखाचित्र प्रदर्शन के साथ शिक्षण विद्यार्थियों को बोझ का अनुभव नहीं होने देता है। बालकों की गणित के पुस्तकों के अवलोकन से पता चलता है कि गणित अधिगम को

सुबोध और मनोरंजक बनाने के लिए सुंदर चित्र बनाए जाते हैं। जैसे गिनती सीखाने के लिए कला का प्रयोग किया जाता है। देखिए चित्र। क्रमशः इसी प्रकार के चित्र बनाए जाते हैं। इसी तरह जोड़ गुणा भाग घटाव के लिए चित्रों का प्रयोग किया जाता है। कोण आकार त्रिभुज चतुर्भुज वर्ग आयत षटकोण तथा उसी प्रकार की आकृतियां गणित के घटक हैं जो कला के नमूने हैं।

- **कला और विज्ञान:-** विज्ञान को कला से सहसंबंधित किए बिना विज्ञान शिक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त करना कठिन है। विज्ञान शिक्षण को रोचक प्रभावपूर्ण एवं यथार्थ बनाने के लिए चित्रों का उपयोग किया जाता है। रसायनविज्ञान में पदार्थ की संरचना चट्टान और मिट्टी घर और वस्त्र इत्यादि का अध्ययन चित्रों की सहायता से किया जाता है।
- **कला तथा भूगोल:-** भूगोल को कला से सहसंबंधित कर रोचक, प्रभावपूर्ण और यथार्थ परक रूप से पढ़ाया जा सकता है। जिसके लिए चित्र रेखाचित्र, मानचित्र, चार्ट, ग्राफ इत्यादि का प्रयोग किया जाता है।
- **कला और अर्थशास्त्र:-** अर्थशास्त्र विषय में आंकड़ों की बहुलता होती है। आंकड़ों का रेखाचित्रिय प्रदर्शन के माध्यम से विद्यार्थियों को समझाया जाता है। तथा इसी प्रकार सभी विषयों में कला का प्रयोग करके विद्यार्थियों को पढ़ाया जा सकता है।

Raju Kumar

Guest Faculty

Woman's Training College

Mob No.- rajumanjay@gmail.com

B.Ed 1st Year

EPC – 2 (Drama Art and Education)

Topic:- कला का अन्य विद्यालयी विषयों से संबंध

(Relationship of Art with other School Subject)